कार्यालय भूवैज्ञानिक

भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उद्योग निदेशालय उत्तराखण्ड
जिला टास्क फोर्स, एंचोली, पिथौरागढ़।

पत्रांक : 2 3 0 / जि0टा0फो0पि0/भवन/भू0निरी0/2021–22 दिनांक : 16-08-2021

सेवा में,

द्वितीय कमान अधिकारी,
57वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल,
सितारगंज, उत्तराखण्ड।

विषयः **सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी थपियाल खेडा की स्थापना हेतु प्रस्तावित 0.99 है0 वन भूमि की भूगर्भीय निरीक्षण आख्या पुनः देने के सम्बन्ध में।**

महोदय,

उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्र संख्या–90/थपियाल खेडा/इंजी/57वीं वाहिनी/स.सी. बल/20/6465 दिनांक 10.07.2021 के माध्यम से आपके द्वारा अवगत कराया गया है कि उक्त कार्यालय के पत्र सं0–1189, दिनांक 25.01.2017 से सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी थपियाल खेडा की स्थापना हेतु प्रस्तावित 0.99 है0 वन भूमि भूगर्भीय की निरीक्षण आख्या प्राप्त हुयी थी, लेकिन प्रस्तावित 0.99 है0 वन भूमि थपिशल खेडा का प्रस्ताव वन प्रभागीय वनाधिकारी द्वारा त्रुटिया लगाने से विलम्ब होने के कारण प्रस्ताव का पूरा नही हो सका, अतः प्रस्ताव को पुनः तैयार करने के लिये नई निरीक्षण आख्या चाही गयीं है।

उक्त के कम में प्रस्तावित स्थल का भूगर्भीय निरीक्षण अधोहस्ताक्षरी द्वारा दिनांक 03 अगस्त 2021 को श्री पुष्कर सिंह धामी, इन्सपेक्टर, एस0एस0बी0 टनकपुर की उपस्थिति में किया गया, जिसकी भूगर्भीय निरीक्षण आख्या इस पत्र के साथ संलग्न कर आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित की जा रही है।

भवदीय,

(हस्ताक्षर) 16/08/2021
(प्रदीप कुमार)
सहायक भूवैज्ञानिक,
पिथौरागढ़।

संख्याः / जि0टा0फो0पिथौ0/भवन/भू0निरी0/2021–22, तददिनांक।

प्रतिलिपि:– निम्नलिखित को सादर सूचनार्थ प्रेषित।

1– निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उद्योग निदेशालय, देहरादून को सादर सूचनार्थ प्रेषित।
2– जिलाधिकारी महोदय, चम्पावत।

(प्रदीप कुमार)
सहायक भूवैज्ञानिक,
पिथौरागढ़।

सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी धपल्यालखेड़ा की स्थापना हेतु प्रस्तावित 0.99 है0 वन भूमि की भूगर्भीय निरीक्षण आख्या:-

प्रस्तावना :-

उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्र संख्या-90/थपियाल खेड़ा/इंजी/57वीं वाहिनी/स.सी. बल/20/6465 दिनांक 10.07.2021 के माध्यम से आपके द्वारा अवगत कराया गया है कि उक्त कार्यालय के पत्र स0-1189, दिनांक 25.01.2017 से सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी थपियाल खेड़ा की स्थापना हेतु प्रस्तावित 0.99 है0 वन भूमि भूगर्भीय की निरीक्षण आख्या प्राप्त हुयी थी, लेकिन प्रस्तावित 0.99 है0 वन भूमि थपिशल खेड़ा का प्रस्ताव वन प्रभागीय वनाधिकारी द्वारा त्रुटिया लगाने से विलम्ब होने के कारण प्रस्ताव का पूरा नही हो सका, अतः प्रस्ताव को पुनः तैयार करने के लिये नई निरीक्षण आख्या चाही गयी है। उक्त के कम में प्रस्तावित स्थल का भूगर्भीय निरीक्षण अधोहस्ताक्षरी द्वारा दिनांक 03 अगस्त 2021 को श्री पुष्कर सिंह धामी, इन्सपेक्टर, एस0एस0बी0 टनकपुर की उपस्थिति में किया गया, जिसकी भूगर्भीय निरीक्षण आख्या निम्नवत हैं-

स्थिति :-

प्रश्नगत स्थल टनकपुर से दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित शारदा नदी के बैराज से दक्षिण-पूर्व की ओर लगभग 02 किमी0 की दूरी पर स्थित है। प्रस्तावित स्थल एक उबड़-खाबड़ भूभाग है जिसमें वर्तमान में स्वस्थानिक प्रजाति के वृक्ष एंव झाड़िया विद्यमान है। स्थल के उत्तर की ओर खुला भूभाग स्थित है जिसमें स्वस्थानिक प्रजाति के वृक्ष व झाड़िया विद्यमान है। स्थल के दक्षिण की ओर भी खुला भूभाग है जिसमें झाड़िया आदि विद्यमान है। स्थल के पूर्व की ओर स्थल से लगभग 1.5 मीटर कम ऊंचाई वाला खुला लगभग समतल भूभाग है जिसके बाद एक बरसाती नाला तदोपरान्त भारत-नेपाल सीमा स्थित है, बरसाती नाले का समरेखण उत्तर 170° की ओर स्थित है। स्थल के पूर्व की ओर स्थित बरसाती नाले का समरेखण तथा जल भहाव की दिशा उत्तर से दक्षिण की ओर है तथा निरीक्षण के समय इस बरसाती नाले में सामान्य जल प्रवाहित होते हुए पाया गया। स्थल के पश्चिम की ओर स्थित भूभाग भी स्थल से लगभग 02 मीटर कम ऊंचाई प्रदर्शित करता है। याचक विभाग द्वारा प्रस्ताव के साथ उपलब्ध कराये गये अभिलेखों/मानचित्र के अनुसार प्रस्तावित स्थल वन विभाग के हल्द्वानी वन प्रभाग के अन्तर्गत शारदा रेंज के शारदा टापू बीट में स्थित है। प्रस्ताव के साथ उपलब्ध कराये गये मानचित्र के अनुसार प्रस्तावित स्थल की भुजाओं की लम्बाई 169 मीटर, 50 मीटर, 196 मीटर तथा 60 मीटर है, इस प्रकार प्रस्तावित सम्पूर्ण भूभाग का कुल क्षेत्रफल 0.90 है0 है। निरीक्षण के समय स्थल पर उपस्थित याचक विभाग के प्रतिनिधि द्वारा अवगत कराया गया कि स्थल पर वर्तमान में अस्थायी एक मंजिल भवनों का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। चयनित स्थल भारतीय सर्वेक्षण विभाग की टोपो शीट सं0 62 C/4 के अन्तर्गत स्थित है। स्थल की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 238 मी0 है। स्थल निम्न अक्षांश व देशान्तर पर स्थित है-

उत्तर 29° 02' 16.7 "

पूर्व 80° 07' 37.7 "

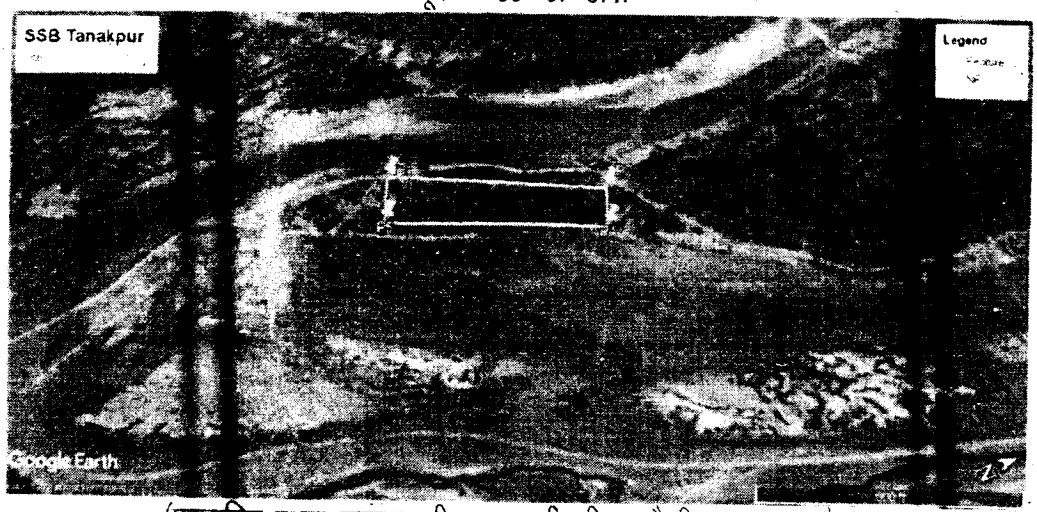

(प्रस्तावित स्थल सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी का गूगल मैप)

भूगर्भीय संरचना :-

प्रस्तावित स्थल पर कठोर स्वस्थानिक चट्टाने दृष्टिगोचर नही होती है। स्थल की सतह पर भूरे रंग की बालू मिश्रित मृदा का मोटा आवरण है। स्थल शारदा नदी के वर्तमान बहाव के पूर्व की ओर स्थित है। भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से यह सम्पूर्ण क्षेत्र हिमालय पर्वत श्रृखंला के दक्षिणी भाग में स्थित बाह्य हिमालय के गिरीपाद में स्थित है जो हिमालयी पर्वत श्रृंखला से निकलने वाली शारदा नदी व अन्य नदियों द्वारा कालान्तर में अपने अपने साथ बहाकर लाये गये नदीय अवसादों के स्थल पर निक्षेपित होकर निर्मित हुआ प्रतीत होता है। प्रस्तावित स्थल भाबर–तराई प्रकृति के भूभाग के मध्य अवस्थित है जिसमें भबर–तराई क्षेत्र की भूगर्भीय संरचना व्याप्त है। स्थल पर ढलाने दृष्टिगोचर नही होती है। तथा स्थल लगभग समतल है जबकि क्षेत्रीय स्तर पर स्थल व स्थल के निकटवर्ती क्षेत्र में सामान्य ढलाने उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर है। प्रस्तावित स्थल पूर्व व पश्चिम की ओर स्थल से कम ऊंचाई वाले भूभाग स्थित है। स्थल को सेटेलाईट इमेज का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि स्थल पूर्व में शारदा नदी का भाग था जिसमें कालान्तर में शारदा नदी की धारा प्रवाहित होती थी तथा प्रस्तावित स्थल कालान्तर में बहने वाली नदी की बहाव की दो धाराओं के मध्य स्थित एक टापूनुमा भूभाग है जो एक रेखीय संरचना है तथा जिसका समरेखण निकटवर्ती पूर्व धाराओं के समरेखण के समान्तर है। स्थल पर वर्तमान में झाड़िया तथा स्थल के निकटवर्ती क्षेत्र में सघन वृक्षाच्छादित भूभाग स्थित है। स्थल पर नीचे की ओर स्थित भूभाग कालान्तर में नदी द्वारा अपने साथ बहाकर लाये गये फलूवियल अवसादों से निर्मित हुआ प्रतीत होता है जो वर्तमान में स्थिर हो गया है। स्थल के पूर्व की ओर स्थित पैलिया चैनल के डिप्रेशन में वर्तमान में एक नाला प्रवाहित होता है जिसको समरेखण तथा बहाव की दिशा उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर है। निरीक्षण के समय इस नाले में जल प्रवाहित होते हुए पाया गया। स्थल पर निर्माण कार्य करते समय स्थल के पूर्व तथा पश्चिमी भाग में स्थित स्थल के कम ऊंचाई वाले भूभाग में सुरक्षात्मक उपाय किये जाने अत्यन्त आवश्यक होगें। निरीक्षण के समय स्थल पर भूधसाव के कोई चिन्ह नही पाये गये। स्थल वर्तमान में स्थिर (प्राकृतिक आपदा को छोड़कर) प्रतीत होता है।

सुझाव एवं शर्ते :–

प्रथम दृष्टिया निरीक्षण के दौरान वर्तमान में ऐसा कोई तथ्य प्रकाश में नही आया जिससे स्थल पर निर्माण से भूखण्ड को कोई खतरा उत्पन्न हो, तथापि भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से स्थल विकास एवं भवन निर्माण करते समय निम्नलिखित सुझावों का अनुपालन किया जाना आवश्यक होगा:–

1. स्थल एक उबड़ खाबड़ भूभाग है, स्थल पर निर्माण कार्य करने से पूर्व स्थल को विकसित कर समतल किया जाना होगा तथा भरान किये जाने वाले स्थानों में मृदा के ठीक प्रकार से बैठ जाने के उपरान्त ही निर्माण किया जाना होगा।
2. स्थल के पूर्व व पश्चिम की ओर स्थित स्थल से कम ऊंचाई वाले उर्ध्वाधर खुले भूभागों में सुरक्षात्मक कार्य किये जाने तथा धारक दीवारों का निर्माण किया जाना अत्यन्त आवश्यक होगा।
3. स्थल पर निर्माण काय्र स्थल की भारग्रही क्षमता के अनुरूप ही किया जाना होगा।
4. स्थल पर निर्माण कार्य यथा सम्भव मध्य भाग में ही किया जाना होगा।
5. भवनों का निर्माण बीम व कॉलम में ही किया जाये तथा नींव को यथोचित गहराई तक ले जाना तथा भवनों का निर्माण भूकम्प के अधिकतम परिमापों के कम्पनों को दृष्टिगत रखते हुए भूकम्पराधी तकनीक को अपनाते हुए किया जाना आवश्यक होगा।
6. स्थल वन भूमि में स्थित है इसलिए स्थल पर निर्माण कार्य करते समय वन संरक्षण अधिनियम–1980 तथा पर्यावरणीय संरक्षण अधिनियम–1986 में निहित सम्पूर्ण प्राविधानों का अनुपालन किया जाना होगा।
7. परिसर के चारों ओर मजबूत चारदीवारी का निर्माण किया जाना सुरक्षा के दृष्टिकोण से आवश्यक होगा।
8. भवनों का निर्माण यथासम्भव हलकी निर्माण सामग्री का प्रयोग करते हुए किया जाये तथा आर0सी0सी0 ब्लांको का उपयोग भवन निर्माण में पूर्णतया प्रतिबन्धित होगा।

9. भवनों के चारों ओर तथा सम्पूर्ण परिसर में वर्षा जल एंव प्रयुक्त जल के निकास हेतु पकको नालियों का निर्माण किया जाना भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से अनिवार्य होगा क्योंकि जल भराव व रिसाव के कारण स्थल पर भूधसाव की सम्भावना से इंकार नही किया जा सकता है।

10. प्रस्तावित स्थल नदीतल से लगभग भूभाग है, जिसमें भविष्य में नदी का जल प्रवाहित होने की संभावना से इन्कार नही किया जा सकता है जिस हेतु प्रस्तावित स्थल पर निर्माण कार्य इस प्रकार से किया जाना होगा, जिससे भविष्य में यदि नदी जल प्रवाहित होता भी हो तो जल भराव से भवन को कोई नुकसान न हो सके।

11. प्रस्तावित स्थल के चारों ओर मजबूत सुरक्षात्मक कार्य तथा उचित उंचाई तक सुरक्षा दीवार का निर्माण किया जाना आवश्यक होगा, जिससे भविष्य में कोई खतरा होने से सुरक्षित किया जा सके।

अतः उपरोक्त सुझावों के अनुपालन की दशा में ही उपरोक्त स्थल भूगर्भीय संरचना के दृष्टिकोण से स्थल विकास एवं भवनों के निर्माण हेतु उपयुक्त प्रतीत होता है। यदि कार्यदायीं विभाग द्वारा उपरोक्त सुझावों का अनुपालन नही किया जाता है तो यह अनापत्ति प्रमाण पत्र स्वतः ही निरस्त समझा जायेगा एवं उक्त के फलस्वरूप भविष्य में उत्पन्न होने वाली भूगर्भीय दृष्टिकोण से विपरीत परिस्थितियों के लिए कार्यदायीं विभाग स्वयं उत्तरदायीं होगा।

Pradeep
16/03/202

(प्रदीप कुमार)
सहायक भूवैज्ञानिक,
पिथौरागढ।